तरह-तरह के जंगल

जंगल के बारे में सोचो तो तुम्हारे दिमाग़ में क्या-क्या बातें आती हैं? झाड़-पेड़, नदी-नाले, जानवर। तुम अलग-अलग पेड़ों को पहचानते कैसे हो? क्या तुम्हें कुछ पेड़ औरों से ज़्यादा अच्छे लगते हैं? कुछ पेड़ शायद हमारे काम आते हों। तुम किन पेड़ों के फल खाते हो? क्या सभी पेड़ों में फल एक ही समय में आते हैं? तुम जंगल के पेड़ों के बारे में बहुत कुछ जानते होगे।

जो तुमने देखा है या जानते हो – कक्षा में चर्चा करके इस तालिका में भरो।

जंगल में पेड़ों के नाम	फल खाते हैं या नहीं	फूल कब आते हैं	चिड़ियाँ घोंसला बनाती हैं	छाल उड़ती है

जैसे जंगल की तुमने चर्चा की वैसे या उससे कुछ अलग और भी कई जंगल हैं। कहीं बहुत घने, कहीं बिरले। कहीं एक तरह के पेड़ ज़्यादा हैं, कहीं किसी और तरह के। कुछ इलाके ऐसे हैं जहाँ जंगल हैं ही नहीं।

इसे और समझने के लिए मध्य प्रदेश के जंगल वाला नक्शा देखो पन्ना नं. 77 पर दिए गए नक्शे को देखो। इसमें जंगल नज़र आ रहे हैं? ज़्यादा जंगल के इलाके पहचानो। कहाँ जंगल नहीं है, बताओ।

मध्य प्रदेश के पूर्वी हिस्से में कई सारे जंगल हैं। नक्शे में चिन्ह देखकर बताओ यहाँ ज़्यादातर कौन- से पेड़ हैं?

चलो पहले इसी इलाके के जंगल की बात करें।

इस इलाके में बारिश काफी ज़्यादा होती है। मध्य प्रदेश के बाकी हिस्सों से ज़्यादा। बारिश वाला *नक्शा देखो।* इसका प्रभाव यहाँ उगने वाले पेड़-पौधों और फसलों पर पड़ता है। किस तरह का प्रभाव पड़ता है- यह आगे पढ़कर पता चलेगा।

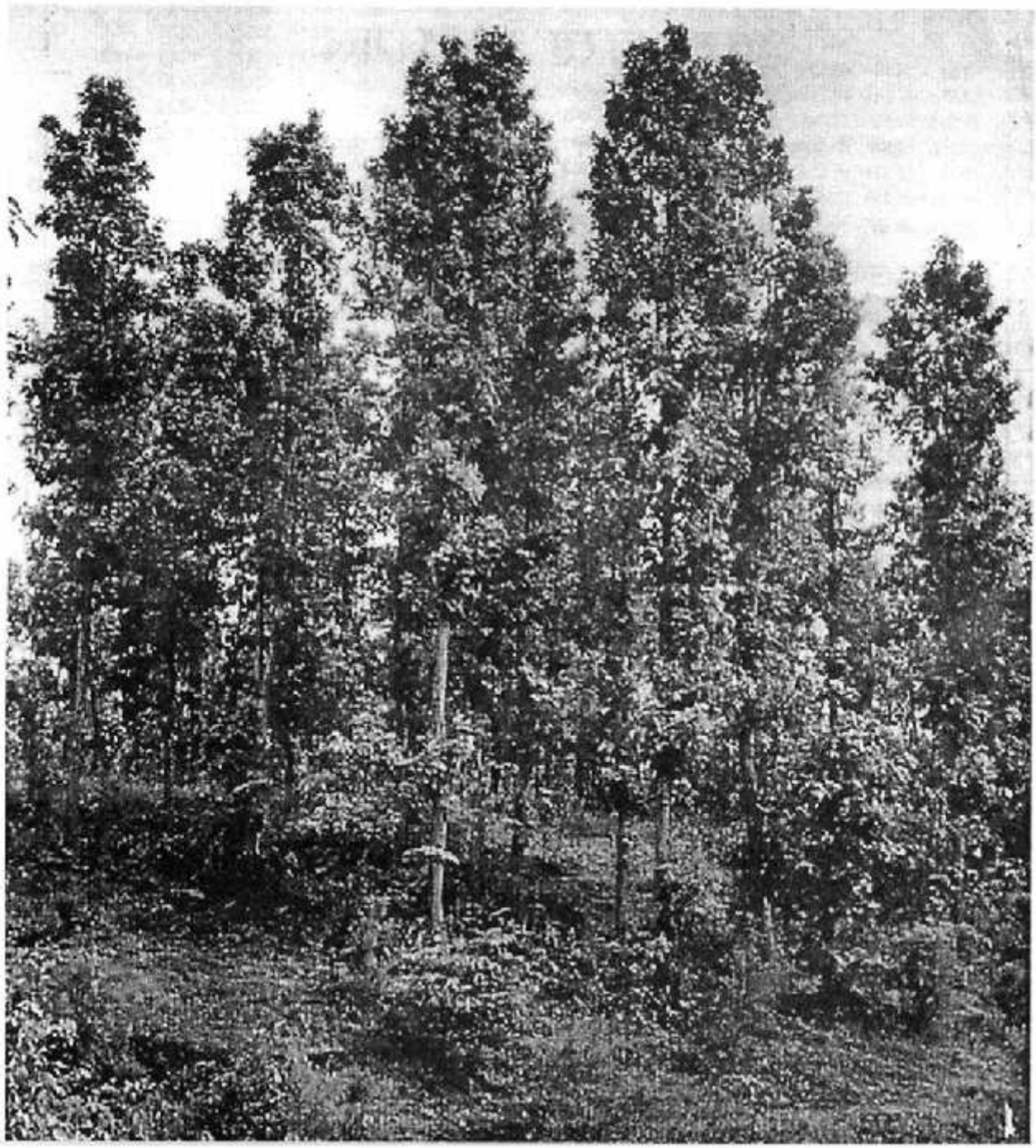

साल का जंगल

साल के जंगल

मध्य प्रदेश के पूर्वी भागों को देखो। यहाँ कितने जंगल हैं?

यहाँ वैसे तो कई तरह के पेड़ होते हैं पर साल के पेड़ सबसे ज़्यादा हैं, इसलिए इन जंगलों की पहचान साल से ही होती है। पूर्वी मध्य प्रदेश में बरसात ज़्यादा होती है, हवा और ज़मीन में नमी भी ज़्यादा रहती है। इस इलाके के सभी पेड़ों की खासियत यह है कि ये सब साल भर हरे रहते हैं। यही कारण है कि इन जंगलों में साल भर हरियाली और ठण्डक सी रहती है। पचमढ़ी की पहाड़ियों के बारे में तो तुमने सुना होगा। वो पहाड़ियाँ भी साल के जंगलों से ढंकी हैं।

साल का पेड़

साल का पेड़

साल भी सागौन की तरह लंबा ऊँचा पेड़ होता है और सागौन की ही तरह उसकी लकड़ी बहुत उपयोगी होती है। पर उसके कई गुण सागौन से अलग हैं।

साल के पेड़ शायद तुम्हारे आसपास के जंगल में भी होंगे। इसे साज भी कहते हैं। क्या इन्हें किसी और नाम से भी जाना जाता है? गोंडी में और कोरकू में इसे क्या कहते हैं?

पहली पहचान

साल का पेड़ अपनी छाल की वजह से बड़ी आसानी से पहचाना जाता है। उसकी छाल काली कड़ी और उभरी हुई होती है।

चित्र में देखो।

पत्तियाँ, फूल, फल

साल हमेशा हरा भरा रहने वाला पेड़ है। यानी इसकी पत्तियाँ झड़ती तो हैं, पर सारी एक साथ नहीं। और कुछ ही दिनों में नई पत्तियाँ भी आ जाती हैं। ऐसा लगता ही नहीं कि पूरा पेड़ खाली हो गया हो, जैसा सागौन हो जाता है। पत्तियाँ झड़ना और नई पत्तियों का आना सब मार्च–अप्रैल के कुछ दिनों में ही हो जाता है। इसकी पत्तियाँ एक बड़े हाथ के बित्ते बराबर होंगी – चिकनी और चमकदार।

मार्च–अप्रैल के महीने में इस पर फूल भी आने शुरू हो जाते हैं। साल के फूल गुच्छों में लगते हैं– हल्के पीले या हरे रंग के।

मई–जून में पीले लाल से फल आ जाते हैं। फल की गुठली में से तेल निकाला जाता है। फल हरी अंखुड़ियों से ढंका होता है।
चित्र में देखो।

कहाँ उगता है

साल के लिए तापमान से ज़्यादा ज़रूरी है नमी। साल को पनपने के लिए गर्मी के साथ–साथ खूब सारी बारिश की ज़रूरत होती है। साथ में दोमट मिट्टी की भी ज़रूरत होती है जो की नमक को देर तक बनाए रखे। इसलिए साल उन इलाकों में

पनपता है जहाँ बरसात ज़्यादा होती है। कम बरसात वाली या रेतीली जगहों पर साल के पेड़ नहीं होते।

खास बात– जंगल में आग लग जाए तो साल के पेड़ पर आम तौर पर असर नहीं पड़ता।

उपयोग

– साल की लकड़ी मज़बूत और टिकाऊ होती है, इसलिए इसका उपयोग घर और बड़े भवन और इमारतें बनाने में होता है।

– रेल की पटरियाँ अपनी जगह से न हिलें और दोनों में समान दूरी बनी रहे, इसलिए उन्हें लकड़ी के पटिए पर कस दिया जाता है। इस पटिए को स्लीपर कहते हैं। स्लीपर का बहुत मज़बूत होना कितना ज़रूरी है यह तो तुम समझ सकते हो। तो देश भर में सबसे ज़्यादा स्लीपर साल की लकड़ी के बनते थे। अब तो इनकी जगह सीमेंट के स्लीपर बनने लगे हैं।

– इसके अलावा, साल की लकड़ी का उपयोग पुल, नाव/डोंगियों, खेती के औज़ारों को बनाने में भी होता है।

– इसके छाल, पत्तियों और टहनियों का चमड़ा उद्योग में इस्तेमाल होता है।

– पेड़ पर खाँचे बनाकर उसका रस निकाला जाता है इसे राल कहते हैं। इस राल का कई तरह से उपयोग होता है। धूप बत्ती में, जूते की पालिश, दीवारों और छतों के प्लास्तर में और कान की बीमारियों की दवाइयों के लिए भी।

– जब अनाज की कमी हो तो लोग बीज को भूनकर खाते हैं। पर इनका स्वाद बहुत अच्छा नहीं होता है।

इस बीज का तेल काफी उपयोगी होता है। खाना पकाने और रोशनी करने के लिए तो लोग इसका इस्तेमाल करते ही हैं, साबुन बनाने में यह भी काम आता है।

साल के पेड़ों के बारे में तुमने इतनी बातें पढ़ीं। अब जंगल में इस पेड़ को फिर से ध्यान से देखना– इसकी छाल, फूल, फल। यहाँ बताई बातों के अलावा भी शायद तुम्हें और भी कई बातें पता चलें।

नए पेड़

फल सूखने के बाद बीज गिरते हैं। साल के नए पेड़ उसके बीज के अंकुरण से ही होते हैं।

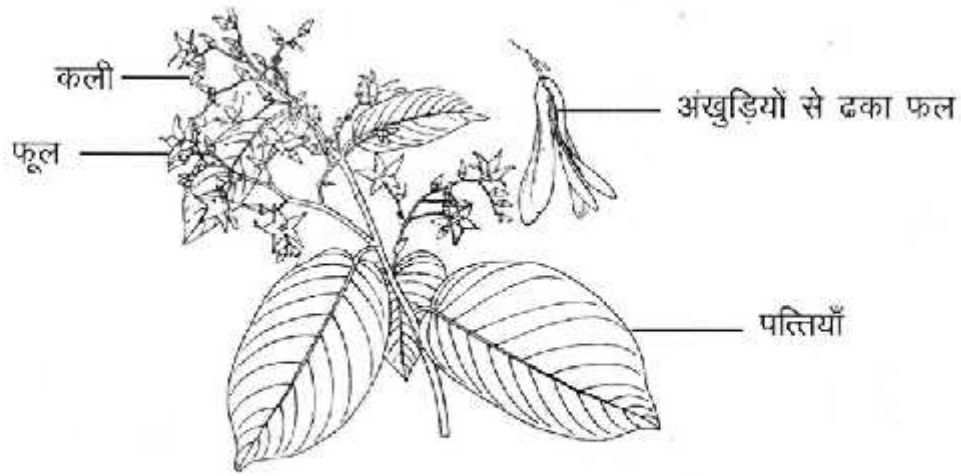

सागौन के जंगल

अब फिर नक्शे में देखो। पचमढ़ी से पश्चिम का इलाका यानी मध्य प्रदेश के लगभग बीच का हिस्सा। यहाँ भी जंगल नज़र आते हैं? यहाँ कौन–से पेड़ ज़्यादा हैं?

पूर्वी भाग की तुलना में यहाँ बारिश कम होती है। इसलिए साल के पेड़ यहाँ कम लगते हैं। यहाँ से सागौन के जंगल शुरू होते हैं। ये जंगल नर्मदा के दोनों तरफ फैले हैं– सतपुड़ा की पहाड़ियों में, विंध्य की पहाड़ियों पर और उनसे आगे भी।

सागौन के जंगल

सागौन के साथ कई और भी पेड़ लगते हैं जैसे– नालों के किनारों पर अर्जुन के पेड़। फिर हल्दू, बीजा, अचार, महुआ, तेन्दु, घिरिया, चिरोल, पलाश आदि।

तुम्हारे आसपास के जंगलों में सागौन के अलावा कौन–कौन से पेड़ हैं? सूची बनाओ तुम्हारे यहाँ के जंगल भी इसी इलाके में हैं।

नक्शे में अपने इलाके ढूँढो

इस जंगल में ज़्यादातर पेड़ सागौन के हैं। यह जंगल सिर्फ बरसात और उसके बाद के कुछ महीनों में ही सही मायने में हरा दिखता है। सर्दियों के अंत तक सागौन के पत्ते झड़ने लगते हैं और गर्मी भर यह जंगल सूखा–भूरा लगता है।

इस जंगल में कई तरह के पेड़ हैं और सबकी अपनी चाल। अलग–अलग पेड़ों में फूल अलग समय पर आते हैं।

क्या तुम बता सकते हो कि पलाश, महुआ, सागौन, आम, इमली आदि पेड़ों में फूल कब लगते हैं? इन पेड़ों के पत्ते झड़ते है या नहीं? झड़ते हैं तो कब?

सागौन

सागौन के बारे में कुछ खास बातें

– सागौन की लकड़ी पर हाथ फेरें तो खुरदुरा तो लगेगा पर उसकी फांस हाथ में चुभेगी नहीं।

इसमें दीमक या कीड़े नहीं लगते। तुमने देखा होगा कुछ तरह की लकड़ी के सामान पर दीमक लग जाती है। दीमक लकड़ी को खा–खा कर कमज़ोर बना देती है। पर सागौन में कीड़े नहीं लगते।

उम्र के साथ वह चिरता नहीं। हवा, पानी, धूप आदि से सागौन की बनी चीज़ों पर कम असर पड़ता है।

आसपास पुराने–पुराने घरों में सागौन की बल्लियाँ, कुर्सी, पलंग वगैरह होंगे। पता करो कितने पुराने हैं और वे किस तरह खराब हुए हैं?

कहाँ उगता है

सागौन के पेड़ों को नमी चाहिए पर उतनी नहीं जितनी साल को ज़रूरत है। जिन इलाकों में कुछ महीने बरसात और कुछ महीने तेज़ गर्मी पड़े वहाँ सागौन अच्छा उगता है। गर्मियों में इसकी पत्तियाँ झड़ जाती हैं और बरसात शुरू होते ही नई पत्तियाँ फूटने लगती हैं।

जहाँ बारिश बहुत ज़्यादा होती है या साल भर में बहुत कम होती है, दोनों इलाकों में सागौन नहीं उगता। मध्य प्रदेश में होशंगाबाद–बैतूल पट्टी में सबसे ज़्यादा सागौन के पेड़ हैं और सबसे बेहतर सागौन भी इसी इलाके में होता है।

नए पेड़

सागौन के बीज तो होते हैं पर उनकी ऊपरी परत काफी कड़ी होती है तो अंकुरित होने में उन्हें काफी समय लगता है। इसलिए सागौन के नए पेड़ मुश्किल से होते हैं। फिर भी ऐसा कहा गया है कि सागौन में खास खूबी यह है कि उसे कितना भी काटा जाए अगर उसकी जड़ छोड़ दी जाए तो उससे नए तने फूट आते हैं और खुद ही कुछ सालों में नए पेड़ तैयार हो जाते हैं।

सागौन की लकड़ी – कुछ ही देर में आग पकड़ लेती है।

सागौन के बारे में अब कुछ बातें तुम बताओ।

क्या सागौन को किसी और नाम से भी जाना जाता है?

छाल – किस रंग की होती है, छूने में कैसी महसूस होती है?

पत्तियाँ –सबसे बड़ी पत्ती ढूँढो, कितने बित्ते लंबी कितने बित्ते चौड़ी है।

–नई पत्तियाँ कब आती हैं? ऊपर की सतह छूने में कैसी है, नीचे से कैसी है, नोंक ऊपर से गोल है? किनारे कैसे हैं? और कुछ...?

–बिलकुल नई पत्तियों को अपनी हथेली पर मसलकर देखा है? करके देखो क्या होता है?

फूल –किस मौसम में आते हैं, उनका रंग कैसा है, क्या उसमें खुशबू होती है?

फूल कैसे दिखते हैं चित्र बनाओ

पूरा गुच्छा एक फूल

बबूल

फिर से नक्शे पर नज़र डालो। मध्य प्रदेश के पश्चिमी इलाके में जंगल ढूँढो। इन जगहों में बारिश बहुत कम होती है। तो पेड़–पौधे भी ऐसे ही होंगे जिनको ज़्यादा पानी की ज़रूरत न पड़ती हो। यहाँ वैसे तो काफी झाड़ियाँ हैं, घास के मैदान हैं, कंटीली झाड़ियों के जंगल हैं, बबूल के पेड़ हैं, पर ये सब बिखरे–बिखरे हैं। कहीं जंगल जैसा पेड़ों से ढंका इलाका नहीं है।

नक्शे में देखकर बताओ बबूल के पेड़ किन इलाकों में हैं?

वैसे कई साल पहले यहाँ इन पेड़ों के जंगल भी थे पर जैसे–जैसे यहाँ लोग आकर बसते गए उनको खेती के लिए ज़मीन की ज़रूरत पड़ती गई। खेतों के लिए उन्होंने पेड़ काटकर ज़मीन तैयार की। धीरे–धीरे यहाँ के जंगल लगभग खत्म हो गए।

बबूल के पेड़

बबूल के पेड़ के बारे में सोचो तो सबसे पहले उसके काँटे याद आते हैं। है न? वैसे बबूल के कांटे गज़ब के होते हैं। इतने बड़े और नुकीले। चुभ जाएँ तो जान निकल जाती है। पर तुम उन्हें खेतों के बागोड़ में या कुछ और चीज़ बनाने में ज़रूर इस्तेमाल करते होगे।

पहचान

बबूल का पेड़ सागौन या साल जैसा लंबा नहीं होता। ज़्यादातर तो झाड़ी जैसा होता है। बढ़ने की अच्छी जगह मिले तो यह पेड़ भी बन जाता है। इसकी पत्तियाँ, फूल और फल छोटे–छोटे होते हैं। हर टहनी पर कई सारी पास–पास होती हैं।

चित्र में देखो
कभी मौका मिले तो देखना क्या टहनी के दोनों तरफ पत्तियों की संख्या बराबर है?

बबूल कई तरह के होते हैं पर सभी की पत्तियाँ छोटी होती हैं। फूल कुछ अलग–अलग तरह के होते हैं। किसी में गोल, पीले रंग के, किसी में छोटे–छोटे फूल डाली भर के आते हैं। किसी में हल्की मीठी सुगंध होती है।

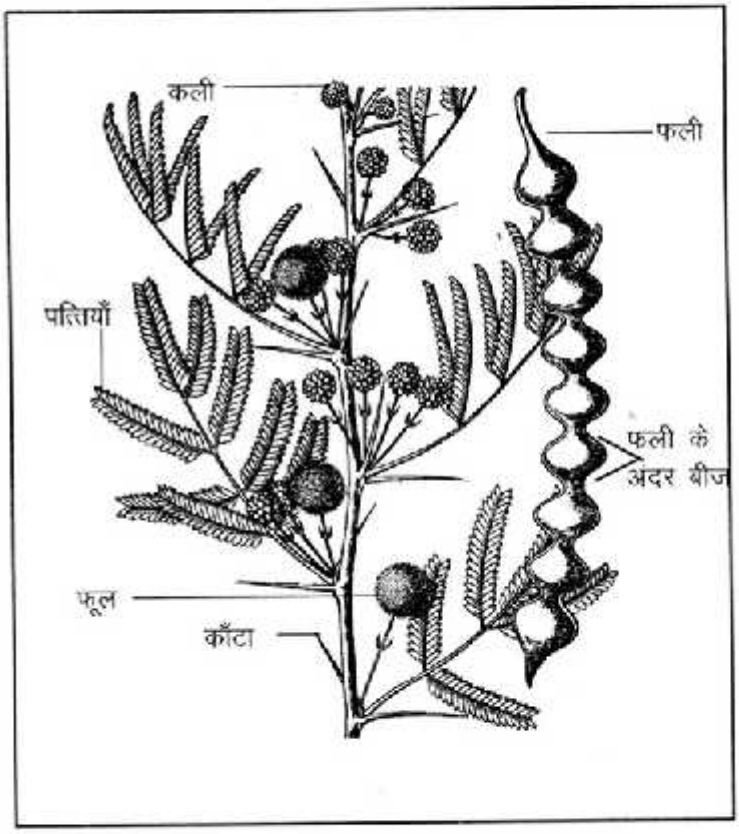

फली के अंदर का हर बीज ऊपर से नज़र आता है।

कहाँ उगता है

बबूल को पानी की खास ज़रूरत नहीं होती। यह आम तौर पर सूखे इलाकों में मिलता है जहाँ बारिश कम होती है। कई जगह तो कम उपजाऊ ज़मीन को सुधारने के लिए इन्हें खास तौर से लगाया जाता है। ऐसे पेड़ लगाने में बबूल के बीज का इस्तेमाल होता है। पर मज़ेदार बात यह है कि जो बीज भेड़, बकरी के बाड़े में से मिलते हैं वो जल्दी और बेहतर उगते हैं।

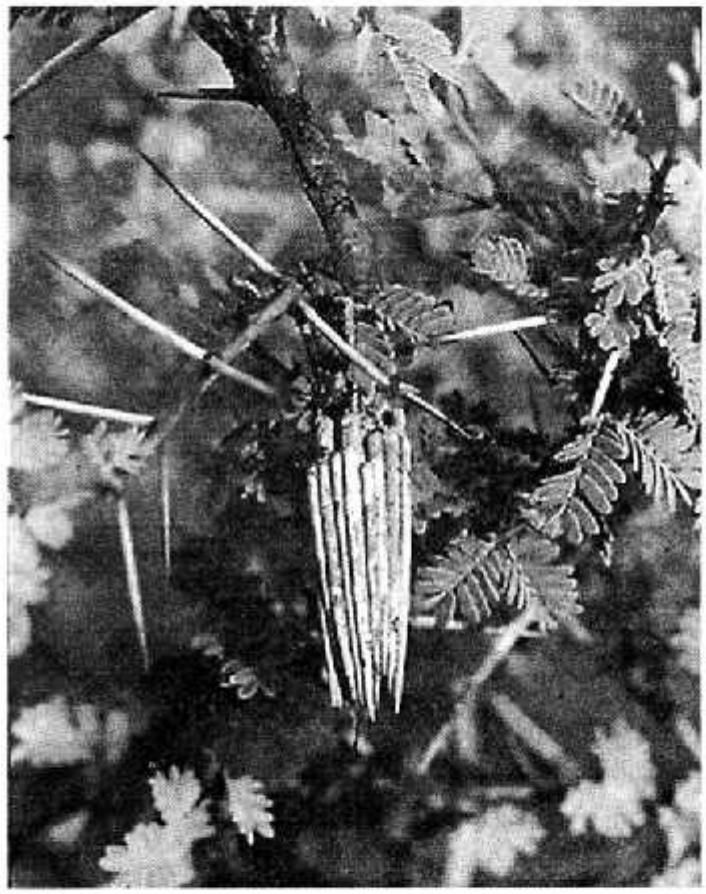

काँटों का घरोंदा

उपयोग

बबूल की छाल का उपयोग चमड़े के कारखानों में होता है। *चमड़े की क्या–क्या चीज़ें हम इस्तेमाल करते हैं। आपस में चर्चा करके पता करो।* इन चीज़ों को बनाने में पहले चमड़े को तैयार करना पडता है। इस तैयारी की प्रकिया में बबूल की छाल का इस्तेमाल करते हैं ताकि चमड़ा मुलायम बन पाए।

सही जोड़ी मिलाओ		
साल	*मध्यम बारिश*	*पश्चिम*
सागौन	*कम बारिश*	*मध्य*
बबूल	*अधिक बारिश*	*पूर्व*

साल, बबूल और सागौन में से

1. *किसकी पत्ती सबसे बड़ी होती है?*
2. *किसकी पत्ती सबसे छोटी होती है?*
3. *कौन सा पेड़ कंटीला होता है?*
4. *किस के बीज को खा सकते हैं?*
5. *किसकी लकड़ी पर हाथ फेरने पर फाँस नहीं चुभते?*

कौन से जंगल में गर्मी के महीनों में सारी पत्तियाँ गिर जाती हैं।

कौन से जंगल साल भर हरे भरे रहते हैं।

यहाँ इन तीन पेड़ों के बारे में कई बातें लिखी हैं। हरेक बात किस पेड़ के बारे में है उसके आगे लिखो

(क) रेल पटरियों के नीचे स्लीपर बनाने
(ख) घर बनाने
(ग) चमड़ा कमाने (मुलायम करने)
(घ) तेल बनाने
(च) धूप बनाने
(छ) फर्नीचर (मेज़, कुर्सी, पलंग) बनाने